लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम दैनिक जागरण
दिनांक 22.11.2019 पृष्ठ सं. 17 कॉलम 3-6

किसानों को मिले डिजिटल प्लेटफार्म

भारतीय कृषि परिवर्तन के सोसियो और डिजीटल दृष्टिकोण विषय पर सेमीनार

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में गुरुवार को इंडियन सोसाइटी ऑफ एक्टेन्शन के संयुक्त तत्वाधान में राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित हुआ। जिसमें दूसरे दिन गुरुवार को किसान और कृषि के क्षेत्र में डिजिटल माध्यमों के प्रयोग पर मंथन हुआ। इसमें सोसाइटी के अध्यक्ष डॉ. यूएस गौतम ने बताया कि अब समय आ गया है कि किसानों को भी डिजिटल प्लेटफार्म की तरफ ले जाने की आवश्यकता है। इसके लिए प्लानिंग तैयार कर सरकार को भेजेंगे ताकि किसानों को खेती व नवाचार की जानकारी उनकी मोबाइल फोन पर आसानी से उपलब्ध हो जाए। इसके लिए कई प्रकार की मोबाइल एप्लीकेशन आज बाजार में प्राइवेट कंपनियों ने भी उतारी हैं और सरकारी संस्थान भी लॉच कर चुके हैं। मगर इनका प्रयोग कैसे करना है यह किसानों तक नहीं पहुंचा। हमारी सलाह है कि देश में आने वाले में समय में किसानों को सोशल मीडिया के जरिए तेज जानकारियां मिलें। ताकि वह आगे बढ़ सकें।

दरअसल भारतीय कृषि परिवर्तन के सोसियो-डिजीटल दृष्टिकोण विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय कांफ्रेंस आयोजित की गई है। इस कांफ्रेंस में लिए गए फैसले देश में आगे चलकर कृषि की नीतियां बनाने में मदद करेंगे। इसमें देश भर से आये हुये कृषि प्रसार वैज्ञानिकों एवं कृषि वैज्ञानिकों ने नौ विभिन्न ओरल कृषि तकनीकी सत्रों के अन्तर्गत कुल 206 ओरल प्रेजेन्टेशन तथा 12 विभिन्न प्रदर्शनी सत्रों के अन्तर्गत कुल 271 पोस्टर प्रेजेन्टेशन के माध्यम से अपने-अपने विचारों एवं उन्नत तकनीकियों का योगदान किया।

संगोष्ठी में व्याख्यान प्रस्तुत करते प्रतिभागी। • एचएयू

इन विशेषज्ञों ने दी प्रस्तुति

ओरल प्रेजेन्टेशन तकनीकी सत्रों एवं पोस्टर प्रस्तुति सत्रों का संचालन देश के कृषि प्रसार वैज्ञानिकों के पुरोधा कहे जाने वाले वैज्ञानिकों में पूर्व कुलपति राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, समस्तीपुर डॉ. गोपालजी त्रिवेदी, पूर्व एडवाइजर, प्लानिंग कमीशन डॉ. वीवी सदामते, पंतनगर स्थित कृषि विवि से डॉ. एसके कश्यप, राजेन्द्र कृषि विवि समस्तीपुर में पूर्व कुलपति डॉ. सी सतपथी, लुधियाना स्थित अटारी के पूर्व निदेशक डॉ. प्रभु कुमार, कृषि विज्ञान विवि बेंगलुर से पूर्व निदेशक प्रसार, डॉ. जी. ईश्वरप्पा, निदेशक भाकृअनुप पूर्वोत्तर क्षेत्र संकुल डॉ. एन. प्रकाश, ने मार्गदर्शन किया।

संगोष्ठी में ये सत्र आयोजित किए गए

- डिजिटल मार्केटिंग में चुनौतियां और अवसर
- जलवायु स्मार्ट कृषि के लिए तकनीकी हस्तक्षेप
- सीबीओ के माध्यम से ग्रामीण समुदाय का सशक्तीकरण
- विस्तार अनुसंधान और नीति में नवाचार
- आर्थिक समृद्धि के लिए अभिसरण मॉडल
- ग्रामीण समुदायों के लिए खाद्य और पोषण सुरक्षा के लिए पहल

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम: दैनिक भास्कर
दिनांक: 22-11-2019 पृष्ठ सं. 6 कॉलम 1-8

किसानों की बेहतरी पर एचएयू में मंथन | एचएयू में सोशियो डिजिटल एपरोचीज फॉर ट्रांसफॉर्मिंग इंडियन एग्रीकल्चर पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी चल रही है। इसमें देश के 23 राज्यों के 500 कृषि विशेषज्ञ मंथन कर रहे हैं। कृषि विस्तार को लेकर किसानों की आमदनी बढ़ाने और सटीक जानकारियां मुहैया करवाने समेत 12 थीम पर मंथन किया जा रहा है। गुरुवार को भास्कर रिपोर्टर ने पूसा अनुसंधान के कृषि प्रसारक मनजीत नैन से खेती तकनीक को लेकर बातचीत की। उन्होंने किसानों की स्थिति, उनके खेती तकनीक संबंधी जानकारी और भविष्य की खेती को लेकर सुझाव दिए। पढ़िए...

देश में अभी 20 फीसदी किसान ही सक्षम, किसान समूह बनाकर खेती करें तो तकनीकी और आर्थिक मदद होगी आसान, बाजार में पहुंच बनाएगी उद्यमी: नैन

ज्योति आरोड़ा | हिसार

पूसा अनुसंधान के कृषि प्रसारक मनजीत नैन बताते हैं कि देश में फिलहाल केवल 20 प्रतिशत किसान ही सक्षम हैं। उन्हें कृषि की पूर्ण जानकारी नहीं है। इन्हें सक्षम बनाने के लिए एफपीओ अहम कदम उठाएगा। किसानों के समूह

डॉ. मनजीत नैन

बनाकर उन्हें आर्थिक व तकनीकी मदद दी जाएगी। समूह में कम से कम 11 किसान होंगे। एफपीओ नाबार्ड का हर जिले में एक उपकेंद्र है। जिसका हेडक्वार्टर मुंबई में है। ये किसानों को भारत सरकार की योजनाओं से अवगत करवा उनकी सहायता से भी कृषि के क्षेत्र नए प्रयोग करने व उन्नति करने का रास्ता निकालेंगे। कौशल विकास योजना के अंतर्गत भारत में 156 स्थानों को चुना जाएगा। जिसमें कृषि विज्ञान केंद्र बना कर कृषि का विस्तार किया जाएगा।

कौशल का विकास कर बढ़ाई जाएगी किसान की आमदनी: महाराष्ट्र में महाबनाना, महाग्रैप्स जैसे ग्रुप बने हैं जो साथ मिलकर कृषि की नई तकनीकों का प्रयोग कर उत्पादन करते हैं, उसी तरह पूरे देश के किसानों के भी क्षेत्रीय कृषि के आधार पर ग्रुप बनाए जाएंगे। इससे किसान एफपीओ के केंद्र की सहायता से खेती कर पाएंगे। जिस प्रकार बिहार के मिल्क प्लांट सुधा फ्रंट से लेवल से शुरुआत कर एक ब्रांड बना, वहां के किसानों को प्रेरित किया है, उसी तरह हर क्षेत्र के किसान उससे प्रेरणा ले सकेंगे। किसानों के पास धन की कमी होती है जिससे वे इस तरफ ध्यान नहीं दे पाते। जब सभी किसान एकजुट हो जाएंगे तो उनके लिए इस तरह का उद्योग लगाना भी आसान हो जाएगा। किसान केवल किसान न रहकर उद्यमी बन पाएंगे। सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं से मदद ले कर कार्य करने से कृषि के क्षेत्र में विभिन्न रोजगार के मौके मिल पाएंगे।

पराली समाधान के तीन रास्ते सुझाए

1. प्रदेश में किसान पराली को समस्या मानते हैं। पराली जलाने पर वातावरण को नुकसान पहुंचता है। पराली जलाने के कारण किसानों पर एफआईआर तक हुई है। किसानों को इस समस्या से निजात दिलाने के लिए देश के विभिन्न कृषि संस्था, आईसीएआर संस्था व आईएआरआई व पूसा अनुसंधान व अन्य कृषि विभागों द्वारा डिकंपोजर उपलब्ध करवाना है जिससे केवल 20 से 30 रुपये प्रति एकड़ के खर्च से इस समस्या से निजात पाई जा सकती है। मगर किसान इसकी ज्यादा जानकारी न होने के कारण वे इसे प्रयोग नहीं कर पाते। इससे पराली 15 से 20 दिन में खाद में तब्दील हो जाती है। इससे पर्यावरण व भूमि को किसी प्रकार की हानि नहीं होती।
2. किसान हैपी सीडर के जरिए भी गेहूं की बुआई कर सकते हैं जिससे पराली के अवशेष मिट्टी में ही मिल जाते हैं। हरियाणा में इसका प्रयोग 20 प्रतिशत हो रहा है। करनाल व कुरुक्षेत्र के किसान इसका प्रयोग कर रहे हैं।
3. किसान बेलर का प्रयोग कर पराली को ईंधन, चारे व बिजली बनाने के लिए प्रयोग में ला सकते हैं। कुछ किसान इस मशीन को खरीद कर दूसरे किसानों के खेतों से 2 हजार रुपये प्रति एकड़ की दर से पराली खरीद रहे हैं।

किसान बिचौलिए की बजाय सीधे कंपनी से करें संपर्क

मनजीत नैन बताते हैं कि किसानों में जानकारी की कमी होने के कारण उन्हें नुकसान उठाना पड़ जाता है। उनमें जानकारी के अभाव का फायदा बिचौलिए ले जाते हैं, वे किसानों से कम कीमत में माल खरीद कर कंपनियों को महंगे दामों पर बेच देते हैं। इससे किसानों को सही दाम नहीं मिल पाता व सारा मुनाफा बिचौलिए व कंपनी ले जाती है। उनके द्वारा की गई शोध में सामने आया है कि बिचौलिए केवल फसल से ही 40 से 50 प्रतिशत तक मुनाफा कमा लेते हैं। इसलिए किसानों में उनकी क्षमताओं का विकास करके संस्थानीकरण करने की जरूरत है।

सेमिनार के दूसरे दिन 206 ओरल प्रजेंटेशन व 271 पोस्टर प्रस्तुत

भास्कर न्यूज | हिसार

एचएयू में संगोष्ठी के दौरान शोधकार्य प्रस्तुत करते विशेषज्ञ।

एचएयू में इंडियन सोसाइटी ऑफ एक्सटेंशन, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में 'भारतीय कृषि परिवर्तन के सोशियो-डिजिटल दृष्टिकोण' विषय पर आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार के दूसरे दिन देशभर से आए कृषि प्रसार वैज्ञानिकों एवं कृषि वैज्ञानिकों ने नौ विभिन्न थीम पर शोध कार्य प्रस्तुत किया। सत्र के अंतर्गत कुल 206 ओरल प्रेजेंटेशन हुई। साथ ही 12 विभिन्न प्रदर्शनी सत्र का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत कुल 271 पोस्टर प्रेजेंटेशन के माध्यम से अपने-अपने विचारों को सबके सामने प्रस्तुत किया।

ओरल प्रेजेंटेशन तकनीकी सत्रों एवं पोस्टर प्रेजेंटेशन सत्रों का संचालन देश के कृषि विस्तार वैज्ञानिक पूर्व कुलपति राजेंद्र कृषि विश्वविद्यालय समस्तीपुर से डॉ. गोपालजी त्रिवेदी, भारत सरकार की प्लानिंग कमीशन के पूर्व एडवाइजर डॉ. वी.वी. सदामते, कृषि विश्वविद्यालय पंतनगर के विभागाध्यक्ष डॉ. एम.के. कश्यप, राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय समस्तीपुर के पूर्व कुलपति डॉ. सी. सतपथी, अटारी के पूर्व निदेशक डॉ. प्रभु कुमार, कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय बेंगलुरु के पूर्व प्रसार निदेशक डॉ. जी. ईश्वरप्पा, भा.कृ.अनु.प. पूर्वोत्तर क्षेत्र संकुल के निदेशक डॉ. एन. प्रकाश, ओडिशा कृषि विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर के कृषि प्रसार के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. केएल डांगी के कुशल मार्गदर्शन में किया गया।

प्रेजेंटेशन में विभिन्न राज्यों के किसानों व खेती में प्रयोग होने वाली समस्याओं के बारे में बताया गया। प्रेजेंटेशन का समय 5 मिनट रखा गया था। इसी समय में उन्हें अपनी शोध का पूर्ण सार सबके सामने रखना था। प्रस्तुति के बाद प्रजेंटेटर से प्रश्न भी पूछे गए।

संगोष्ठी के दूसरे दिन छह सत्र आयोजित किए

- डिजिटल मार्केटिंग में चुनौतियां और अवसर : डॉ. प्रभु कुमार - अध्यक्ष, डॉ. हेमा त्रिपाठी - सह-अध्यक्ष, डॉ. मंजू दहिया - संयोजक।
- जलवायु स्मार्ट कृषि के लिए तकनीकी हस्तक्षेप : डॉ. सी. सतपथी - अध्यक्ष, डॉ. पी.पी. पाल, - सह-अध्यक्ष, डॉ. बीना यादव - संयोजक।
- सीबीओ के माध्यम से ग्रामीण समुदाय का सशक्तीकरण : डॉ. जी त्रिवेदी- अध्यक्ष, डॉ. रामगोपाल लाहा, - सह-अध्यक्ष, डॉ. पी.एस. सहरावत - संयोजक।
- विस्तार अनुसंधान और नीति में नवाचार : डॉ. वी.वी. सदामते - अध्यक्ष, डॉ. के.एम. कदियान-सह-अध्यक्ष, डॉ. जे.एस.मलिक - संयोजक।
- आर्थिक समृद्धि के लिए अभिसरण मॉडल : डॉ. ओ.एस. वर्मा - अध्यक्ष, डॉ. सूर्या राठौर - सह-अध्यक्ष, डॉ. एम.के. मेहता - संयोजक।
- ग्रामीण समुदायों के लिए खाद्य और पोषण सुरक्षा के लिए पहल : डॉ. जी.ईश्वरप्पा - अध्यक्ष, डॉ. बी.एस. मीनावत - सह-अध्यक्ष, डॉ. हरिकांत वर्मा - संयोजक।

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम अमर उजाला
दिनांक 22.11.2019 पृष्ठ सं 6 कॉलम 1-5

एचएयू में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

किसान उत्पादक संगठन और सीधी बिक्री प्रणाली से कृषि को बनाएं फायदे का सौदा

झज्जर स्थित केवीके के वैज्ञानिक डॉ. उमेश ने एनसीआर की मंडियों का किया अध्ययन

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार। किसान उत्पादक संगठन बनाकर और सीधी बिक्री प्रणाली अपनाकर किसान कृषि को फायदे का सौदा बना सकते हैं। यह कहना है झज्जर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ संयोजक डॉ. उमेश शर्मा का। उन्होंने इसी विषय को लेकर एनसीआर स्थित मंडियों का अध्ययन किया, जिसमें सामने आया कि सीधी बिक्री प्रणाली पूरी तरह से सहकारिता पर निर्भर है। डॉ. उमेश ने बीरवार को एचएयू में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में इसी विषय पर अपना पेपर भी प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ) के माध्यम से जहां किसान को अपनी पैदावार के सही दाम मिलते हैं, वहीं खरीदार को भी उचित कीमत पर वस्तु मिलती है। वहीं अगर अकेला उत्पादक अपनी पैदावार बेचने जाता है तो उसका मुनाफा बिचौलियों को मिलता है। डॉ. शर्मा के मुताबिक किसान एफपीओ व कस्टम हायर सेंटर के माध्यम से अलग-अलग कृषि उत्पाद पैदा करने वाले एक मंच पर साथ आ ज्यादा मुनाफा कमा सकते हैं। एफपीओ सिस्टम में किसान को उसके उत्पाद के भाव अच्छे मिलते हैं, उत्पाद की बर्बादी कम होती है, अलग-अलग लोगों के अनुभवों का फायदा मिलता है।

बोले - सीधी बिक्री प्रणाली पूरी तरह से सहकारिता पर है निर्भर

जैविक खेती को मिल रहा बढ़ावा

उन्होंने बताया कि अब जैविक उत्पादों की काफी मांग है और एफपीओ के माध्यम से जैविक खेती को बढ़ावा मिल रहा है। मगर एफपीओ के लिए किसानों को प्रशिक्षित करना जरूरी है। इसके लिए उनका व्यक्तित्व विकास करना होगा। इसके अलावा किसानों को 24 घंटे जागरूक रहना पड़ेगा। डॉ. उमेश ने बताया कि हरियाणा में सहकारिता की भावना बढ़ रही है और सीधी बिक्री प्रणाली सौ प्रतिशत सहकारिता पर निर्भर करती है।

डॉ. उमेश शर्मा।

दिल्ली की मंडियों में आने वाला दो तिहाई उत्पाद हरियाणा का

डॉ. उमेश के मुताबिक अनाज के लिए उन्होंने दिल्ली की नजफगढ़ व नरेला मंडी का अध्ययन किया। इन मंडियों में आने वाला अनाज गेहूं, धान, सरसों व बाजरा का दो तिहाई हिस्सा हरियाणा के जिले सोनीपत, झज्जर, फरीदाबाद, रोहतक से आता है। इसके अलावा सब्जी के लिए उन्होंने आजादपुर व फूलों के लिए महरौली मंडी का अध्ययन किया।

वर्ष 2050 तक ज्यादातर नॉर्थ इंडियन मांसाहारी नहीं हुए तो मर जाएंगे भूखे

धीरे-धीरे किसान खेती छोड़ रहे हैं और किसानों की संख्या कम होती जा रही है। इस स्थिति में वर्ष 2050 तक अगर ज्यादातर नॉर्थ इंडियन लोगों ने खाने में पौधेजन को शामिल नहीं किया तो यहां के लोग भूखे मर जाएंगे। यह कहना है एमपीयूएटी उदयपुर से संबंधित प्रोफेसर डॉ. केएल डांगी, जिन्होंने संगोष्ठी में बीरवार को अपना पेपर प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि आज हमें कृषि उत्पादों में पोषक तत्वों की मात्रा बढ़ाने की जरूरत है, क्योंकि आज भी देश में काफी संख्या में लोग कुपोषण व एनीमिया आदि से पीड़ित है। हमें दूध, अंडा, मछली आदि का उत्पादन बढ़ाना होगा, ताकि लोगों को पूरी मात्रा में पोषक तत्व मिल सके। किसानों को खेती के साथ मधुमक्खी, मछली या सुअर पालन आदि को अपनाना होगा। इसके लिए फार्मर प्रोड्यूसर ऑर्गेनाइजेशन, फार्मर इंटरेस्ट ग्रुप व सेल्फ हेल्प ग्रुप आदि का गठन करना होगा।

डॉ. केएल डांगी

जलवायु परिवर्तन को लेकर चलाना होगा अभियान

जिस तरह देश में पोलियो को लेकर अभियान चलाया जाएगा, ठीक वैसे ही जलवायु परिवर्तन को लेकर हमें एक अभियान चलाना होगा। यह कहना है बीएचयू वाराणसी के प्रोफेसर डॉ. कल्याण का। उन्होंने एचएयू में आयोजित संगोष्ठी में जलवायु परिवर्तन पर अपना पेपर प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि अभी तक जलवायु परिवर्तन को लेकर हममें डर नहीं है और इस समस्या को हम बड़े ही हल्के ढंग से ले रहे है, जबकि इस समस्या से निपटने के लिए हमें इस पर गंभीरता से काम करना होगा। हमें विकास के लिए वातावरण को काफी नुकसान पहुंचाया है। ऐसा बात नहीं है कि हम विकास को बढ़ावा न दें। हम ऐसे कदम उठाएं, जिससे विकास तो होते पर वातावरण को भी नुकसान न पहुंचे। हमें इस मुद्दे को राजनीतिकरण भी करना होगा। एक-दो दिन पहले जलवायु परिवर्तन को लेकर संसद में बहस हुई, उसमें 18 प्रतिशत सांसद ही मौजूद रहे। इससे पता चलता है कि हमारे प्रतिनिधि जलवायु परिवर्तन को लेकर कितने संजीदा है। देश के हर नागरिक को इसमें अपना योगदान देना होगा।

डॉ. कल्याण

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम दैनिक ट्रिब्यून
दिनांक 22.11.2019 पृष्ठ सं. 7 कॉलम 6-8

हकृवि में देशभर के कृषि प्रसार वैज्ञानिकों का जमावड़ा

'सोशियो-डिजिटल दृष्टिकोण' पर मंथन

हिसार, 21 नवंबर (निस)

हिसार स्थित हकृवि में बृहस्पतिवार को संगोष्ठी में व्याख्यान प्रस्तुत करते प्रतिभागी। -निस

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'भारतीय कृषि परिवर्तन के सोशियो-डिजिटल दृष्टिकोण' विषय पर आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार के दूसरे दिन देश भर से आए हुए कृषि प्रसार वैज्ञानिकों एवं कृषि वैज्ञानिकों ने 9 विभिन्न ओरल कृषि तकनीकी सत्रों के अन्तर्गत कुल 206 ओरल प्रेजेन्टेशन तथा 12 विभिन्न प्रदर्शनी सत्रों के अन्तर्गत कुल 271 पोस्टर प्रेजेन्टेशन के माध्यम से अपने-अपने विचारों एवं उन्नत तकनीकियों का योगदान किया।

ओरल प्रेजेन्टेशन तकनीकी सत्रों एवं पोस्टर प्रेजेन्टेशन सत्रों का संचालन देश के कृषि प्रसार वैज्ञानिकों के पुरोधा कहे जाने वाले वैज्ञानिकों में पूर्व कुलपति राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय समस्तीपुर, डॉ. गोपालजी त्रिवेदी पूर्व एडवाइजर प्लानिंग कमीशन भारत सरकार, डॉ. वीवी सदामते विभागाध्यक्ष कृषि विश्वविद्यालय पंतनगर, डॉ. एसके कश्यप पूर्व कुलपति राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय समस्तीपुर, डॉ. सी सतपथी पूर्व निदेशक अटारी, डॉ. प्रभु कुमार पूर्व निदेशक प्रसार कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय बेंगलुर, डॉ. जी. ईश्वरप्पा निदेशक भाकृअनुप पूर्वोत्तर क्षेत्र संकुल, डॉ. एन प्रकाश पूर्व विभागाध्यक्ष कृषि प्रसार उड़ीसा कृषि विश्वविद्यालय भुवनेश्वर व डॉ. केएल डांगी के मार्गदर्शन एवं दिशानिर्देशन में किया गया।

कार्यक्रम के विभिन्न तकनीकी सत्रों में देशभर से सम्मिलित हुए कृषि प्रसार वैज्ञानिकों ने इनके द्वारा तकनीकी वक्तव्यों का लाभ लिया।

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम दैनिक जागरण
दिनांक 22.11.2019 पृष्ठ सं. 4 कॉलम 1-4

जगी उम्मीद | विशेषज्ञ मानते हैं कि प्राइवेट कंपनियों, शिक्षण संस्थानों और वैज्ञानिकों को मिलकर करना होगा काम

कृषि शोध से हुए आविष्कारों को किसानों तक पहुंचाने के लिए योजना आयोग को सलाह देगी आइएसईई

पंकज शर्मा • हिसार

देश में कृषि क्षेत्र से जुड़े शिक्षण संस्थानों में रिसर्च के बाद कई नए आविष्कार हो रहे हैं। इसमें तकनीक से लेकर विभिन्न प्रकार की फसलों की वैरायटी व प्रक्रियाएं भी शामिल हैं। मगर अक्सर यह नवाचार शिक्षण संस्थानों तक ही सीमित रह जाता है, किसानों तक इसकी सीमित जानकारी ही पहुंच पाती है। इन नई जानकारियों को किसानों तक उनकी ही भाषा में पहुंचाने के लिए माध्यम मौजूदा समय में कौन सा होना चाहिए, इसका विकास भी अभी तक लंबित है। इन चीजों को योजना के स्तर तक लाने का प्रयास आइएसईई (इंडियन सोसाइटी फॉर एक्सटेंशन एजुकेशन) के सदस्यों ने शुरू कर दिया है। इसी के तहत रूपरेखा गुरुवार को चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में नेशनल कांफ्रेंस के दौरान प्लानिंग कमीशन में सलाहकार रह चुके डा. वीवी सदामते व कुलपति प्रोफेसर केपी सिंह ने तैयार की।

उन्होंने दैनिक जागरण से बातचीत में बताया कि दो दिन में विस्तार शिक्षा को लेकर कृषि क्षेत्र के विशेषज्ञों ने जो विचार साझा किए हैं, उसमें सबसे अहम है कि हम किसानों तक शोध को कैसे पहुंचाएं, किस माध्यम से पहुंचाएं और इस कार्य में किस-किस की मदद लें इस पर मंथन हुआ है। विशेषज्ञों की रिकमंडेशन को हम देशभर में विभिन्न राज्यों की सरकारों व भारत सरकार को भेजेंगे।

दो दिन की राष्ट्रीय कांफ्रेंस में विस्तार शिक्षा को लेकर यह पहलू आए सामने

रिसर्च पर जोर दें

डा. सदामते बताते हैं कि शोध एवं विस्तार शिक्षा के क्षेत्र में हमें सबसे पहले यह पता चला कि अधिक से अधिक शोध होना आवश्यक है ताकि देश में अधिक उत्पादकता वाली फसलें, रोग रहित फसलें, हर मौसम को झेलने वाली फसलें मिल सकें। जिस प्रकार से मेडिकल, रोबोटिक साइंस या दूसरे क्षेत्रों में लगातार रिसर्च को महत्ता मिली है इसी प्रकार देश के सभी कृषि आधारित शिक्षण संस्थानों को अधिक से अधिक रिसर्च पर जोर देना होगा।

विस्तार शिक्षा में कई स्तरों पर काम करना जरूरी

विस्तार शिक्षा विभाग के अध्यक्ष डा. जोगेंद्र सिंह मलिक बताते हैं कि मौजूदा समय में जिस मात्रा में किसानों तक जानकारियां, शोध या नई तकनीक पहुंचनी चाहिए वह नहीं पहुंच पा रही। अक्सर शिक्षण संस्थानों तक सिमट कर शोध रह जाते हैं। इस पर डा. सदामते ने कहा कि इस समस्या के लिए विस्तार शिक्षा को कई स्तरों पर काम करना होगा। इसके लिए प्राइवेट कंपनियों का साथ लेना होगा, किसानों को जोड़ना होगा, विशेषज्ञों का साथ और जमीन से रेस्पांस भी लेना होगा। इसके साथ ही संचार क्रांति के वर्तमान साधनों का प्रयोग कर जिसमें खासकर सोशल मीडिया आदि का प्रयोग कर किसानों तक संपूर्ण जानकारी साझा करनी होगी।

डा. वीवी सदामते, पूर्व सलाहकार, योजना आयोग, भारत सरकार। • जागरण

एग्रीकल्चर मार्केटिंग और महिलाओं और युवाओं के लिए अलग योजना

विशेषज्ञों ने बताया कि अभी तक कृषि के क्षेत्र में मार्केटिंग की कमी है। ऐसे में एग्रीकल्चर मार्केटिंग में भी विशेषज्ञ शोध करें और उसे किसानों तक पहुंचाएं। इसके साथ ही महिलाओं व युवाओं के लिए कृषि में विशेष योजना की आवश्यकता है।

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम पंजाब केसरी
दिनांक 22.11.2019 पृष्ठ सं 4 कॉलम 1-2

कृषि वैज्ञानिक उन्नत तकनीकों पर कर रहे मंथन

संगोष्ठी में अपना व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए प्रतिभागी।

हिसार, 21 नवम्बर (ब्यूरो): चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में इंडिन सोसायटी ऑफ एक्टैंशन के संयुक्त तत्वावधान में 'भारतीय कृषि परिवर्तन के सोसियो-डिजीटल दृष्टिकोण' विषय पर आयोजित 3 दिवसीय राष्ट्रीय सैमीनार किया जा रहा है।

उक्त कार्यक्रम में देशभर से आए हुए कृषि प्रसार वैज्ञानिकों एवं कृषि वैज्ञानिकों ने 9 विभिन्न ओरल कृषि तकनीकी सत्रों के अंतर्गत कुल 206 ओरल प्रैजैंटेशन तथा 12 विभिन्न प्रदर्शनी सत्रों के अंतर्गत कुल 271 पोस्टर प्रैजैंटेशन के माध्यम से अपने-अपने विचारों एवं उन्नत तकनीकियों का योगदान किया।

इस दौरान डिजीटल मार्कीटिंग में चुनौतियां और अवसर, ग्रामीण समुदायों के लिए खाद्य और पोषण सुरक्षा के लिए पहल सहित अन्य विषयों पर विचार रखे गए।

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम वीर भूमि
दिनांक 22.11.2019 पृष्ठ सं 14 कॉलम 3-4

सोशियो डिजिटल दृष्टिकोण पर हकृवि में राष्ट्रीय सेमिनार

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हकृवि में इंडियन सोसाइटी ऑफ एक्टेन्शन, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वाधान में भारतीय कृषि परिवर्तन के सोशियो-डिजिटल दृष्टिकोण विषय तीन दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार किया जा रहा है। देशभर से आए हुए कृषि प्रसार वैज्ञानिकों एवं कृषि वैज्ञानिकों ने नौ विभिन्न ओरल कृषि तकनीकी सत्रों के अन्तर्गत कुल 206 ओरल प्रेजेन्टेशन तथा 12 विभिन्न प्रदर्शनी सत्रों के अन्तर्गत कुल 271 पोस्टर प्रेजेन्टेशन के माध्यम से अपने-अपने विचारों एवं उन्नत तकनीकियों का योगदान किया। ओरल प्रेजेन्टेशन तकनीकी सत्रों एवं पोस्टर प्रेजेन्टेशन सत्रों का संचालन देश के कृषि प्रसार वैज्ञानिकों के पुरोधा कहे जाने वाले वैज्ञानिकों में पूर्व कुलपति राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, समस्तीपुर, डॉ. गोपालजी त्रिवेदी, पूर्व एडवाइजर, प्लानिंग कमीशन, भारत सरकार, डॉ. वी.वी. सदामते; विभागाध्यक्ष, कृषि विश्वविद्यालय, पंतनगर, डॉ. एसके कश्यप; पूर्व कुलपति, राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, समस्तीपुर, डॉ. सी. सतपथी; पूर्व निदेशक, अटारी, लुधियाना, डॉ. प्रभु कुमार; पूर्व निदेशक प्रसार, कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, बंगलुर, डॉ. जी. ईश्वरप्पा आदि के कुशल मार्गदर्शन एवं दिशानिर्देशन में किया गया। इस दौरान देशभर से सम्मिलित हुए कृषि प्रसार वैज्ञानिकों ने तकनीकी वक्तव्यों का लाभ लिया।

■ नौ तकनीकी सत्रों में 206 ओरल और 271 पोस्टर प्रजेंटेशन की

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम ...... नभ-छोर ......
दिनांक 21.11.2019 ...... पृष्ठ सं. 2 ...... कॉलम 2-4 ......

बायोएनर्जी वायु प्रदूषण के खतरे को समग्र रूप से समाज को बचाने में मदद करेगा : कार्यशाला

हिसार/21 नवंबर/रिपोर्टर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग एंड टैक्नोलॉजी के नवीकरणीय एवं जैव ऊर्जा विभाग में बायोमास कन्वर्जन टैक्नोलॉजीज फॉर क्रॉप रेसिडु, मैनेजमेंट विषय पर एक स्पार्क-एमएचआरडी प्रायोजित 10 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारंभ किया गया। कार्यशाला कार्यक्रम का उद्घाटन, कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी के डीन, डॉ. आरके झोरड द्वारा किया गया। उन्होंने कहा कि हमें खुशी है कि इस कार्यशाला में अधिकांश प्रतिभागी युवा है जो समाज का मुख्य आधार है। धान की पुआल जलाने से हरियाणा और आसपास के राज्यों पंजाब और दिल्ली में प्रदूषण की समस्या बढ़ रही है। इस कार्यशाला में युवा प्रतिभागी बायोमास रूपांतरण की आधुनिक तकनीकों के बारे में ज्ञान प्राप्त करें। ताकि बायोएनर्जी को अपने शोध कार्यों में, इस ज्ञान को शामिल करने का प्रयास करेंगे जो अंततः वायु प्रदूषण के इस खतरे से समग्र रूप से समाज को बचाने में मदद करेगा। कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय एवं स्पार्क परियोजना के अंतराष्ट्रीय सह-पीआई के साथ-साथ पाठ्यक्रम के सह-निदेशक प्रो. साहब ने कहा कि ऐसे कार्यशालाओं का संगठन भारत के लिए विशेष रूप से भारत की ऊर्जा आवश्यकता के रूप में महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि भारत को ऊर्जा के पारम्परिक स्रोतों से दूसरी और तीसरी पीढ़ी के जैव ईधंन पर अपना ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है। इस वर्कशाप में देश के विभिन्न संस्थानों जैसे पीएयू, लुधियाना, सीआईएई, भोपाल, एमएएनआईटी भोपाल, मक्का अनुसंधान केन्द्र लुधियाना, आईआईटी दिल्ली, सीएसएसआरआइ करनाल, जीजेयू हिसार, विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के प्रतिभागी और पीएचडी के विद्यार्थी भाग ले रहे हैं। इस अवसर पर वरिष्ठ प्रोफेसर, डॉ. पुष्पा ख़रब ने भी भाग लिया, जिन्होंने वर्तमान परिदृश्य मे इस कार्यशाला के आयोजन में विभाग के प्रयास की सराहना की। इस प्रशिक्षण के दौरान वक्ताओं द्वारा फसल अवशेष प्रबन्धन के लिए बायोमास रूपातंरण प्रौद्योगिकियों के विभिन्न पहलुओं पर विभिन्न व्याख्यान आयोजित किए जाएगें। डॉ. वाईके यादव, पाठयक्रम निदेशक और डॉ. यादविका इस कार्यशाला के आयोजन सचिव हैं।

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम....सिटी पल्स....
दिनांक 21.11.2019.... पृष्ठ सं. 2.... कॉलम 1-4....

विभिन्न फसल प्रणाली आधारित एप्स से जुड़कर समस्याओं का समाधान ले सकते हैं किसान : वीसी

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में शुरू हुई तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी, 500 वैज्ञानिक ले रहे हैं भाग

सिटीपल्स न्यूज, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में सोशियो डिजिटल एपरोचीज फॉर ट्रांसफोरमिंग इंडियन एग्रीकल्चर पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ हुआ। यह संगोष्ठी भारतीय विस्तार शिक्षा समिति, नई दिल्ली, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार व बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, बाँदा (उत्तर प्रदेश) के संयुक्त तत्वाधान में कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित की जा रही है। इस अवसर पर हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के.पी. सिंह मुख्य अतिथि थे जबकि बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविधालय, बाँदा के कुलपति एवं अध्यक्ष, भारतीय विस्तार शिक्षा समिति, नई दिल्ली डॉ. युएस गौतम ने संगोष्ठी की अध्यक्षता की। इस अवसर पर न्यूजीलैंड, के मैसी विश्वविद्यालय के प्रो. क्रेग मैकगिल, आईएसईई के वरिष्ठ उपाध्यक्ष, डॉ. जी ईश्वरप्पा, आईएसईई के सचिव, डॉ. बीके सिंह, एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के पूर्व डीडीजी, डॉ. सी प्रसाद, मंच पर उपस्थित थे।

हिसार। प्रो. के.पी. सिंह सम्मानित वैज्ञानिकों के साथ

प्रो. के.पी. सिंह ने कहा कि वर्तमान में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के नए प्लेटफार्म विकसित हुए है जिसमें जीआईएस, रिमोट सेंसिंग, एक्सपर्ट सिस्टम, नॉलेज पोर्टल्स, ई-मार्केटिंग पोर्टल्स आदि मुख्य हैं। इससे सूचना प्रसार और संदेशों को किसानों की नई पीढ़ी तक पहुचाने मे कृषि क्षेत्रों में एक क्रांति पैदा की है। वर्तमान में किसान विभिन्न फसल प्रणाली आधारित एप्स से जुड़कर अपने मोबाईल फोन पर अपनी कृषि संबधी एवं कृषि उत्पाद के विपणन संबधी समस्याओं का समाधान ले सकते है व अपने जोखिम को घटाने के साथ-साथ अपनी आमदनी बढ़ा सकते है। प्रो. सिंह ने कहा कि वैज्ञानिकों द्वारा सिफारिश की गई तकनीकों से फसलोत्पादन की अधिक पैदावार ली जा सकती है जबकि किसानों द्वारा औसत पैदावार कम ली जा रही है जिसका मुख्य कारण सिफारिश की गई तकनीकों का सही तरीके से न अपनाना है। उन्होंने विशेषज्ञों का आवाहन करते हुए कहा कि लैब मे किए गए शोध को सही तरीके से किसानों तक पहुचाने मे उनकी महत्वपूर्ण भूमिका है तथा इसके लिए कृषि के तकनीकी ज्ञान को सूचना एवं प्रौद्योगिकी एवं डिजिटल प्लेटफार्म का अधिक से अधिक इस्तेमाल करके किसानों तक सरल तरीके से पहुचाया जाए। संगोष्ठी के अध्यक्ष, डॉ. यूएस गौतम ने बताया कि देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों से आए 500 कृषि विस्तार विशेषज्ञ, कृषि वैज्ञानिक व शोध छात्र बारह थीम पर मन्थन करेंगे जिसमें मुख्यत: डिजिटल रणनीति और सतत कृषि विकास के लिए दृष्टिकोण, विस्तार अनुसंधान और नीति में नवाचार, कृषक समुदाय की क्षमता निर्माण में प्रगति, सोसाइटीओ के माध्यम से ग्रामीण समुदाय का सशक्तीकरण, माध्यमिक कृषि के लिए डिजिटल दृष्टिकोण आदि होंगे।

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम दैनिक भास्कर
दिनांक 22.11.2019 पृष्ठ सं. 5 कॉलम 1-4

वर्कशॉप • एचएयू में सीओए में 10 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारंभ, ज्यादातर प्रतिभागी होंगे युवा

फसल अवशेष प्रबंधन के लिए बायोमास रूपांतरण प्रौद्योगिकी के विभिन्न पहलुओं पर किया जाएगा मंथन, प्रदूषण से समाज को बचाने में मिलेगी मदद

भास्कर न्यूज | हिसार

एचएयू के कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी के नवीकरणीय एवं जैव ऊर्जा विभाग में बायोमास कन्वर्जन टैक्नोलॉजीज फॉर क्रॉप रेसिडुए मैनेजमेंट विषय पर एक स्पार्क-एमएचआरडी पर आयोजित 10 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारंभ किया गया। कार्यशाला कार्यक्रम का उदघाटन, कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी के डीन डॉ. आरके झोरड द्वारा किया गया। इसमें पाठयक्रम के निदेशक डॉ. वाईके यादव और कार्यशाला की आयोजन सचिव डॉ. यादविका हैं। इस प्रशिक्षण के दौरान वक्ताओं द्वारा फसल अवशेष प्रबंधन के लिए बायोमास रूपांतरण प्रौद्योगिकी के विभिन्न पहलुओं पर विभिन्न व्याख्यान आयोजित किए जाएंगे।

एचएयू में आयोजित कार्यशाला को संबोधित करते डॉ. आर.के. झोरड़

डॉ. आरके झोरड़ ने बताया कि इस कार्यशाला में अधिकांश प्रतिभागी युवा है जो समाज का मुख्य आधार है। धान की पराली जलाने से हरियाणा और आसपास के राज्यों पंजाब और दिल्ली में प्रदूषण की समस्या बढ़ रही है। इस कार्यशाला में युवा प्रतिभागी बायोमास रूपांतरण की आधुनिक तकनीकों के बारे में ज्ञान प्राप्त करेंगे ताकि बायोएनर्जी को अपने शोध कार्यों में शामिल करने का प्रयास करे सकें। जो वायु प्रदूषण के इस खतरे से समाज को बचाने में मदद करेगा।

अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला भारत के ऊर्जा क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण : प्रो. शहाब

कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय एवं स्पार्क परियोजना के अंतर्राष्ट्रीय सह-पीआई के साथ-साथ पाठ्यक्रम के सह-निदेशक प्रो. शहाब ने कहा कि ऐसे कार्यशालाओं का आयोजन भारत के लिए उसकी की ऊर्जा की आवश्यकता के रूप मे महत्वपूर्ण है। उन्होंनें कहा कि भारत को ऊर्जा के पारम्परिक स्रोतों से दूसरी और तीसरी पीढ़ी के जैव ईंधन पर अपना ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। इस वर्कशाप में देश के विभिन्न संस्थानों जैसे पीएयू लुधियाना, सीआईएई भोपाल, एमएएनआईटी भोपाल, मक्का अनुसंधान केन्द्र लुधियाना, आईआईटी दिल्ली, सीएसएसआरआइ करनाल व जीजेयू हिसार के विभिन्न विभागों के प्रतिभागी और पीएचडी के छात्र भाग ले रहे है।

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम अमर उजाला
दिनांक 22.11.2019 पृष्ठ सं 6 कॉलम 7-8

इंजीनियरिंग कॉलेज में आयोजित कार्यशाला को संबोधित करते डॉ. आरके झोरड़।

जैव ईंधन पर अपना ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता : शहाब

हिसार (ब्यूरो)। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के इंजीनियरिंग कॉलेज के नवीकरणीय एवं जैव ऊर्जा विभाग में वीरवार को बायोमास कन्वर्जन टेक्नोलॉजिज फॉर क्रॉप रेसिडुए मैनेजमेंट विषय पर 10 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारंभ किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन कॉलेज के डीन, डॉ. आरके झोरड़ ने किया।

उन्होंने कहा कि धान की पराली जलाने से हरियाणा और आसपास के राज्यों पंजाब और दिल्ली में प्रदूषण की समस्या बढ़ रही है। इस कार्यशाला में युवा प्रतिभागी बायो मास रूपांतरण की आधुनिक तकनीकों के बारे में ज्ञान प्राप्त करेंगे, ताकि बायो एनर्जी को अपने शोध कार्यों में इस ज्ञान को शामिल करने का प्रयास करेंगे, जो अंततः वायु प्रदूषण के इस खतरे से समग्र रूप से समाज को बचाने में मदद करेगा।

कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय एवं स्पार्क परियोजना के अंतरराष्ट्रीय सह-पीआई के साथ पाठ्यक्रम के सह-निदेशक प्रो. शहाब ने कहा कि भारत को ऊर्जा के पारंपरिक स्रोतों से दूसरी और तीसरी पीढ़ी के जैव ईंधन पर अपना ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। इस वर्कशॉप में देश के विभिन्न संस्थानों जैसे पीएयू, लुधियाना, सीआईएई, भोपाल, एमएएनआईटी भोपाल, मक्का अनुसंधान केंद्र लुधियाना, आईआईटी दिल्ली, सीएसएसआरआई करनाल, जीजेयू हिसार, विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के प्रतिभागी और पीएचडी के छात्र भाग ले रहे हैं। इस अवसर पर वरिष्ठ प्रोफेसर, डॉ. पुष्पा खरब ने भी भाग लिया। इस प्रशिक्षण के दौरान वक्ताओं द्वारा फसल अवशेष प्रबंधन के लिए बायोमास रूपातंरण प्रौद्योगिकियों के विभिन्न पहलुओं पर विभिन्न व्याख्यान आयोजित किए जाएंगे।

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम हरि भूमि

दिनांक 22.11.2019 पृष्ठ सं. 12 कॉलम 3-4

हकृवि में कार्यशाला शुरू

हिसार। हकृवि के कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी के नवीकरणीय एवं जैव ऊर्जा विभाग में बायोमास कन्वर्जन टेक्नोलॉजिज फॉर क्रॉप रेसिड्यु मैनेजमेंट विषय पर एक स्पार्क-एमएचआरडी प्रायोजित 10 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारंभ किया गया। कार्यशाला कार्यक्रम का उद्घाटन, कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजिज के डीन, डॉ. आरके झोरड़ द्वारा किया गया। उन्होंने कहा कि हमें खुशी है कि इस कार्यशाला में अधिकांश प्रतिभागी युवा है जो समाज का मुख्य आधार है। धान की पुआल जलाने से हरियाणा और आसपास के राज्यों पंजाब और दिल्ली में प्रदूषण की समस्या बढ़ रही है। इस कार्यशाला में युवा प्रतिभागी बायोमास रूपांतरण की आधुनिक तकनीकों के बारे में ज्ञान प्राप्त करेंगे ताकि बायोएनर्जी को अपने शोध कार्यों में इस ज्ञान को शामिल करने का प्रयास करेंगे। जो अंततः वायु प्रदूषण के इस खतरे से समग्र रूप से समाज को बचाने में मदद करेगा। कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय एवं स्पार्क परियोजना के अंतरराष्ट्रीय सह-पीआई के साथ-साथ पाठ्यक्रम के सह-निदेशक प्रो. शहाब ने कहा कि ऐसे कार्यशालाओं का संगठन भारत के लिए विशेष रूप से भारत की ऊर्जा आवश्यकता के रूप मे महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि भारत को ऊर्जा के पारम्परिक स्त्रोतों से दूसरी और तीसरी पीढ़ी के जैव इंधन पर अपना ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है।

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम सिटी पल्स
दिनांक 21.11.2019 पृष्ठ सं 2 कॉलम 1

बायोमास कन्वर्जन टैक्नोलॉजिज फॉर क्रॉप रेसिडु मैनेजमेंट विषय पर कार्यशाला शुरू

सिटीपल्स न्यूज, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी के नवीकरणीय एवं जैव ऊर्जा विभाग में बायोमास कन्वर्जन टैक्नोलॉजिज फॉर क्रॉप रेसिडु मैनेजमेंट विषय पर एक स्पार्क-एमएचआरडी प्रायोजित 10 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारंभ किया गया। कार्यशाला कार्यक्रम का उदघाटन, कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी के डीन, डॉ. आर.के. झोरड द्वारा किया गया। उन्होंने कहा कि हमें खुशी है कि इस कार्यशाला में अधिकांश प्रतिभागी युवा है जो समाज का मुख्य आधार है। धान की पुआल जलाने से हरियाणा और आसपास के राज्यों पंजाब और दिल्ली में प्रदूषण की समस्या बढ़ रही है। इस कार्यशाला में युवा प्रतिभागी बायोमास रूपांतरण की आधुनिक तकनीकों के बारे में ज्ञान प्राप्त करेंगे ताकि बायोएनर्जी को अपने शोध कार्यों में इस ज्ञान को शामिल करने का प्रयास करेंगे जो अंततः वायु प्रदूषण के इस खतरे से समग्र रूप से समाज को बचाने में मदद करेगा। इस वर्कशाप में देश के विभिन्न संस्थानों जैसे पीएयू, लुधियाना, सीआईएई, भोपाल, एमएएनआईटी भोपाल, मक्का अनुसंधान केन्द्र लुधियाना, आईआईटी दिल्ली, सीएसएसआरआइ करनाल, जीजेयू हिसार, विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के प्रतिभागी और पीएचडी के छात्र भाग ले रहे है। इस अवसर पर वरिष्ठ प्रोफेसर, डॉ. पुष्पा खरब ने भी भाग लिया, जिन्होंने वर्तमान परिदृश्य में इस कार्यशाला के आयोजन में विभाग के प्रयास की सराहना की। डॉ. वाईके यादव, पाठ्यक्रम निदेशक और डॉ. यादविका इस कार्यशाला के आयोजन सचिव है।

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम दैनिक ट्रिब्यून
दिनांक 23.11.2019 पृष्ठ सं 7 कॉलम 6-8

स्पोर्ट्स कार्नर

कृषि महाविद्यालय बना बॉस्केटबाल चैम्पियन

हिसार में बृहस्पतिवार को अंतर महाविद्यालय फुटबाल के फाइनल मैच की टीमें। -निस

हिसार (निस) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय अन्तर महाविद्यालय में बास्केटबाल व फुटबाल प्रतियोगिताओं का आज फाइनल मुकाबला हुआ। बास्केटबाल में कृषि महाविद्यालय हिसार ने गृह विज्ञान महाविद्यालय को पराजित कर प्रतियोगिता जीती। वहीं, फुटबाल प्रतियोगिता में लाला लाजपतराय पशुविज्ञान विश्वविद्यालय ने कृषि महाविद्यालय हिसार को 5-2 के स्कोर से पराजित कर स्वर्ण पदक प्राप्त किया।

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम दैनिक जागरण
दिनांक 22.1.2019 पृष्ठ सं. 17 कॉलम 3-6

खेलकूद | चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय अंतर महाविद्यालय में बास्केटबॉल व फुटबॉल स्पर्धा आयोजित

बास्केटबॉल में एचएयू और फुटबॉल में लुवास विजेता

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय अन्तर महाविद्यालय में बास्केटबाल व फुटबाल प्रतियोगिताओं का गुरुवार को फाइनल मुकाबला हुआ। जिसमें बास्केटबाल प्रतियोगिता में कृषि महाविद्यालय हिसार और गृह विज्ञान महाविद्यालय तथा फुटबाल प्रतियोगिता में लाला लाजपतराय पशुविज्ञान विश्वविद्यालय और कृषि महाविद्यालय हिसार के बीच मैच खेला गया। प्रतियोगिताओं के मुख्य अतिथि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण निदेशक डॉ. देवेन्द्र सिंह दहिया रहे।

फुटबाल टीम के साथ अतिथिगण। • एचएयू

बास्केटबाल प्रतियोगिता मे कृषि महाविद्यालय हिसार ने गृह विज्ञान महाविद्यालय को पराजित कर बास्केटबाल प्रतियोगिता में विजेता घोषित हुए तथा गृह विज्ञान महाविद्यालय टीम उपविजेता रही। बास्केटबाल में मुख्य निर्णायक की भूमिका लुवास के डॉ. यशवन्त सिंह तथा होली चाईल्ड स्कूल के प्रशिक्षक रामनिवास व ओम इन्स्टीटयूट के बास्कटबॉल कोच अशोक कुमार ने निर्णायक मंडल की भूमिका निभाई। बास्केटबाल प्रतियोगिता के अंत में खेल के आयोजन सचिव रमेश चौधरी ने बताया कि इस प्रतियोगिता में पुरूषों की 6 टीमों ने जबकि महिला वर्ग की 5 टीमों ने हिस्सा लिया। वहीं फुटबाल प्रतियोगिता में लाला लाजपतराय पशुविज्ञान विवि ने कृषि महाविद्यालय हिसार को 5-2 के स्कोर से पराजित कर फुटबाल मुकाबले में प्रथम स्थान प्राप्त कर स्वर्णपदक विजेता बने तथा दूसरा स्थान लाला लाजपत राय पशु विज्ञान विश्वविद्यालय द्वितीय स्थान प्राप्त कर रजत पदक विजेता बनी। फुटबाल खेल के प्रभारी व सह छात्र कल्याण निदेशक डॉ. सुशील लेगा ने विवि के सभी अन्तर महाविद्यालय मुकाबलों की शानदार सफलता के लिए आयोजकों व सहयोगियों की प्रशंसी की। फुटबाल में मुख्य निर्णायक की भूतिका नवीन कड़वासरा ने निभाई।

लोक संपर्क कार्यालय

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम ......अमर उजाला......

दिनांक ..22.11.2019.... पृष्ठ सं. ....6.... कॉलम ...3-4...

हैंडबाल में कृषि कॉलेज हिसार और बावल कॉलेज बने विजेता

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित इंटर कॉलेज स्पोर्ट्स चैंपियनशिप के तहत हैंडबाल स्पर्धा के फाइनल मुकाबले वीरवार को बावल स्थित एग्रीकल्चर कॉलेज में आयोजित किए गए। इस दौरान महिला वर्ग में एग्रीकल्चर कॉलेज ने होम साइंस कॉलेज को 7-4 और पुरुष वर्ग में एग्रीकल्चर कॉलेज बावल ने एग्रीकल्चर कॉलेज हिसार को 20-17 के अंतर से हराकर पहला स्थान हासिल किया। इससे अलावा फुटबाल स्पर्धा में एग्रीकल्चर कॉलेज हिसार ने लुवास को 5-2 के अंतर से हराकर प्रतियोगिता जीती। वहीं बास्केटबाल के महिला वर्ग में एग्रीकल्चर कॉलेज हिसार ने होम साइंस कॉलेज को हराकर पहला स्थान प्राप्त किया। इस अवसर पर सह छात्र कल्याण निदेशक डॉ. सुशील लेघां, डॉ. किशोर कुमार, डॉ. बलजीत गिरधर, ओमप्रकाश भादू, निर्मल सिंह, दलजीत सिंह, रमेश चौधरी आदि मौजूद रहे।